International Journal of Sociology and Political Science
www.sociologyjournal.in
Online ISSN: 2664-7745
Received: 28-02-2026, Accepted: 31-03-2026, Published: 15-04-2026
Volume 8, Issue 2, 2026, Page No. 27-28

उराँव जनजाति महिलाओं कि सामाजिक एवं संस्कृति (झारखण्ड राज्य रामगढ़ जिले के संदर्भ में)

सुमन कुमारी
शोधार्थी, समाजशास्त्र विभाग, राधा गोविंद विश्वविद्यालय, रामगढ़, झारखण्ड, भारत

सारांश
यह लेख उराँव महिलाओं कि सामाजिक एवं संस्कृति झारखण्ड राज्य रामगढ़ जिले के रहने वाली महिलाओं के जीवन में सामाजिक एवं संस्कृति का संघर्ष विवेचना को प्रस्तुत करता है। इस जनजाति कि महिलाएँ झारखण्ड और आस–पास के क्षेत्रों में सामाजिक और संस्कृति रूप से रीढ़ की हडी मानी जाती है। जो कि उराँव जनजाति महिलाएँ स्वतंत्र और संस्कृति धरोहर को संजोए हुए है। वे कृषि, परिवार और सामुदायिक नृत्य गीत में सक्रिय सम्मान्यजनक स्थान प्राप्त। उराँव महिलाओं कि पूर्ण रूप से स्वतंत्रा प्राप्त है। अब शिक्षा और रोजगार के प्रति जागरूक हो रही है। लेकिन कुछ ऐसी भी महिलाए है वो गरीबी और लैंगिक विभाजन के कारण चुनौतियां बनी हुई है। अब महिलाएँ व केवल संस्कृति को जीवन रखे हुए है, बल्कि सामाजिक स्थिति कि चुनौतियों का सामना करते हुये आत्म निर्भर बनने की दिशा में भी बढ़ रही है।

मूल शब्द: उराँव महिलाएँ,सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन, झारखण्ड (रामगढ़ जिला), आत्मनिर्भरता

झारखण्ड राज्य रामगढ़ जिले में उराँव महिलाओं कि सामाजिक संघर्ष

उराँव समुदाय जिसकी महिलाओं कि सामाजिक संस्कृति कि पहचान उनका कुडुरू भाषा से है। यह झारखण्ड के प्रमुख अनुसूचित जनजाति के रूप में स्थापित है। इतिहासिक रूप से रामगढ़ क्षेत्र कि विशेषता, मांडू, गोला और पतरातु जैसे केन्द्र रहा है। उराँव जनजाति के महिलाओं सामाजिक संघर्ष पितृसतामक मानदंडो, आर्थिक एवं शिक्षा के अभाव की कमीयों के कारण उन्होंने संस्कृतिक बदलावों के बीच अपनी पहचान बनाए रखने की लड़ाई लड़ी है। उन्होंने घरेलू हिंसा, नशाखोरी और बाल विवाद, जैसे समस्याओं के साथ साथ संपति के अधिकारों की कमी और मुख्यधारा के विकास में उपेक्षा का सामना करती है। देखा जाए तो अभी कुछ ऐसी उराँव जनजाति कि महिलाएँ है जो सामाजिक आर्थिक, और संस्कति संघर्ष के साथ–साथ सशक्तिकरण की और बढ़ रही है।

रामगढ़ जिले के उराँव महिलाओं का संघर्ष के प्रमुख बिन्दु

- **शिक्षा और जागरूकता**

उराँव जनजाति महिलाओं के ग्रामीण क्षेत्रों की अपेक्षा शहरी क्षेत्रो में शिक्षा के पति जागरूकता बढ़ी है। लेकिन अभी भी कुछ ऐसी महिलाएँ है जिनको शिक्षा का अभाव और जागरूकता का एक प्रमुख चुनौती है।
रूढ़िवादी सोच, सामाजिक अन्याय, घरेलू, हिंसा के खिलाफ लड़ने, स्वस्थ अधिकारों के प्रति जागरूक होने और आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनने का सहायक है।

- **संस्कृतिक अस्मिता की रक्षा**

इस जनजाति में महिलाएँ अपनी अस्मिता यानि अपनी पहचान कि रक्षा के लिए पारंपरिक भाषा (कुडरू) त्योहारों, सरहुल, करमा, नृत्य, लोकगीतों का संरक्षण कर रही है। उराँव जनजाति के महिलाएं फसल कटाई के बाद सरहुल का पूजा करते है जो कि प्रकृति का पारंपरिक पूजा माना जाता है। यह भी एक प्रकार कि अपनी संस्कृति का पहचान की रक्षा है।
अभी भी कुछ ऐसी महिलाएं है जो पीतल ताँबे के गहनों का इस्तमाल करते है।

- **दोहरा संघर्ष**

अभी भी उराँव जनजाति कि महिलाए सामाजिक एवं सांस्कृति आर्थिक स्थिति के बीच में फसी हुई है। वे घरेलू काम काजों के साथ–साथ वह कृषि कार्यों में अपना योगदान देती है। लेकिन अपनी संस्कृति के अनुसार वह संपति के अधिकारों से वंचित रहती है। क्योंकि संपति का अधिकार केवल घर के लड़कों को ही दिया जाता है।

- **सामाजिक रूढ़ियाँ और प्रथाएँ**

उराँव जनजाति महिलाओं की सामाजिक एवं अन्य प्रथाएँ को मुख्य रूप से कुडुख संस्कृतिक पर आधारित है। अभी भी कुछ ऐसी महिलाएं है जो घर के चार दिवारों के अंदर रहना पड़ता है। सामाजिक प्रथाएँ के अनुसार बेटी को पूर्ण रूप से शिक्षा नहीं दिया जाता है। वहीं दूसरे और बेटो को घर से बाहर विदेशों में पढ़ाई पूरी करने के लिए भेजा जाता है।

- **आर्थिक निर्भरता व चुनौतियां**

उराँव जनजाति कि महिलाएं कुछ ऐसे है जो दुसरे पर निर्भर है यह एक गरीबी और बेरोजगारी को जन्म देती है। जिससे समाज का विकास रूक जाता है। झारखण्ड के उराँव जनजाति महिलाओं की संपति पर कम अधिकार और घरों के कामों में सीमित रहने के कारण वे आर्थिक रूप से पूरूषों पर निर्भर हो जाती है।

उराँव जनजाति महिलाओं का सामाजिक एवं संस्कृति का महत्व

इस जनजाति में सामाजिक एवं संस्कृति का महत्व अत्यंत गहरा है। उरांव जनजाति कि महिलाएँ मेहनती होने के साथ–साथ पांरपरिक गोदना प्रथा लोक गीतों और जाती शिकारी जैसे योजनाओं जैसे अपनी संस्कृति को जीवित रखती है।

सामाजिक एवं सांस्कृति महत्व

- **स्वतंत्रता और तलाक प्रथाम**

झारखण्ड राज्य रामगढ़ जिले के उराँव जनजाति महिलाओं को अपनी जीवन साथी चुनने का स्वतंत्रता है। और तलाक प्रथा विधवा को भी अपना साथी चुनने को अनुमति है।

- **धमकुड़िया (पारंपरिक संस्था)**

धमकुड़िया उराँव जनजाति झारखण्ड के एक पारंपरिक युवागृह और सामाजिक एवं सांस्कृतिक शिक्षण केंद्र है। यह एक ऐसा संस्था है जो किशोर–किशोरियों की रीति–रिवाजों और सामूदायिक जीवन का व्यवहारिक प्रशिक्षण दिया जाता है।

- **परिवार की रीढ़**

झारखण्ड राज्य रामगढ़ जिले के उराँव जनजाति कि महिलाएँ घर के काम–काजो के साथ–साथ वह वे खेती रूपाई, कटाई और वन उत्पादों के संग्रह में भी अपनी भूमिका निभाती है।

- **संस्कृतिक संरक्षक**

इस जनजाति कि महिलाएं अपनी संस्कृतिक को पारंपरिक रूप से निभाती है। जैसे कि लोक नृत्यों (करमा, सरहुल) की एक प्रमुख संवादक है। करमा पूजा जैसे त्योहारो कि सांस्कृतिक दर्शाती है।

निष्कर्ष

झारखण्ड राज्य के रामगढ़ जिले के उराँव जनजाति महिलाएं काफी मेहनती और कठिन परिश्रम करती है। ये महिलाए घर के पूरे परिवारों को खुश रखती है तथा बाहर जाकर नौकरी भी करती है। कुछ ऐसी भी महिला है जो ईट भट्टा, खदानों आदि कार्यों में काम करने जाती है जिससे वह अपने परिवार को देख–भाल कर सके। पुरूषोंके साथ कंधा से कंधा मिलाकर चल रही है।

उराँव जनजाति महिलाओं कि अनेक समस्या देखा जाता है। जैसे कि आर्थिक समस्या, सामाजिक समस्या इत्यादि। कुछ ऐसे भी महिलाएं है जो अभी भी जादू टोना पर भरोसा कती है। भेद भाव कि भावना रखती है। कुछ ऐसी भी महिलाओं का कहना है कि महिला एवं पुरूष मैं अभी भी भेद भाव होता है। इसी प्रकार के अनेक समस्या झारखण्ड राज्य रामगढ़ जिले के उराँव जाति महिलाओं के पास सामाजिक एवं आर्थिक समस्या देखने को मिलता है।

संदर्भ सूची

1. Dr. Warealesh Ram (JCRT) उराँव जनजाति महिलाओं की वर्तमान परिस्थितियों एवं चुनौतियों का एक समाज शास्त्रीय विश्लेषण पृष्ठ– 236–241।
2. भारत सरकार, भारत की जनगणना 2011 : झारखण्ड नई दिल्लीः रजिट्रार जनरल ऑफ इंडिया, 2011 पृ0 203–267।
3. रामगढ़ जिला प्रशासन, रामगढ़ जिला प्रशासन : रामगढ़ जिला सांख्यिकीय पुस्तिका 2019/रामगढ़ योजना एवं सांख्यिकीय विभाग झारखण्ड सरकार, 2019, पृष्ठ 61–84।
4. उराँव सुशीला (2016) Cultural identity and Globalization : A study of oraon tribe in Jharkhand Ranchi University.
5. मुंडा, रामदयाल (2010) आदिवासी समाज और संस्कृति रांची, झारखण्ड अध्ययन परिषद।
6. राय, शरदचंद्र : छोटा नागपुर के उराँव। कलकत्ताः एशियायिक सोसाईटी, 1915 (पृष्ठ) 33–84।
7. शर्मा, वीमल भारत की जनजाति संस्कृति 1 नई दिल्ली, नेश्नल बुक ट्रस्ट 2005, पृष्ठ 56–92
8. उराँव जोसेफ : कुडुख समाज में सांस्कृतिक संरक्षक। राँची जनजातीय शोध संस्था 2020 पृष्ठ 131–176।